

# सत्य साहित्य

वर्ष 2 / अंक 4  
जुलाई 2019  
Year 2 / No. 4  
July  
2019

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

# सर्व शक्ति परमात्मनो श्रीरामाय नमः

राम जब ऐसा वर मैं पाऊं,  
 दया-दान दो परम देव जी  
 वरदा दृष्टि पसारो।  
 देव-द्वार का जिताते सदा मैं,  
 दामानुदाम कहाऊं ॥१॥  
 ध्रुव धारण पाऊं कुम्भ में,  
 आशा एक भरोसा।  
 अचल-चूल वत् निश्चल निश्चय,  
 परा प्रीति डर लाऊं ॥२॥  
 एक भक्ति ही भागवतू! तेरी,  
 दूसरा देव न देखूँ।  
 राम नाम में लगन लगा कर,  
 दुबिधा दूर भगाऊँ ॥३॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

## इस अंक में पढ़िए

- भजन
- महानिर्वाण दिवस
- शुभ कामनाएँ
- Sant Vachan
- गुरु शरणागति
- गुरु कृपा
- प्रथम दर्शन
- साधक के नाम पत्र
- श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5

29 जुलाई

## महानिर्वाण दिवस

उस ने जड़ी सुनाम दे, हरे जन्म के रोग ।  
संशय भ्रांति दूर कर, हरे मरण के सोग ॥

(भक्ति प्रकाश पृ 102)

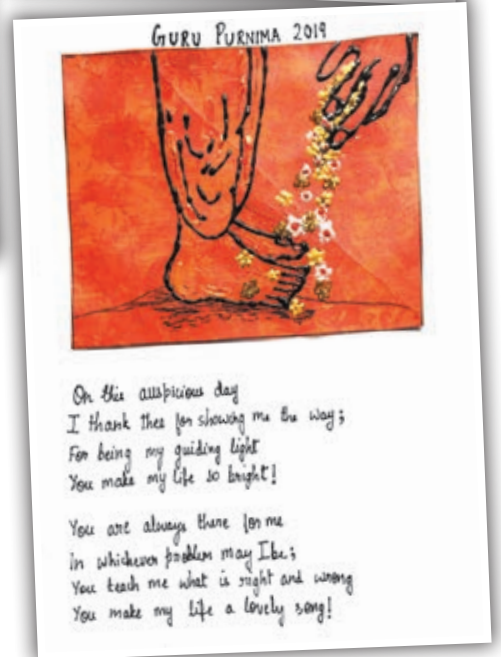
2 जुलाई

# गुरु पूर्णिमा : शुभ कामनाएँ

16 जुलाई

Happy Gyaas Pournima to all wellwishes

१०-१००







## Sant Vachan

सत्यानन्द

One upon whom a Saint casts his compassionate glance and who becomes the recipient of his hallowed blessings imbued with love, he most certainly will attain union with God. Lord's special grace descends upon him in abundance. Some day or the other all his obstacles will be shattered to smithereens. In all the three worlds he is under protection. Because Saints are indeed the embodiment of God.

प्रवचन पीयूष, पृ. 510



## गुरु शरणागति

प्रेम

आत्मा प्रेम स्वरूप है। जिसने यह जान लिया है, वह हर एक से प्रेम करता है। वह किसी से वैर विरोध नहीं करता। वह हर एक आत्मा में अपने आपको ही देखता है। मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य से नफरत नहीं करनी चाहिए बल्कि उसकी बुराइयों से नफरत करनी चाहिए। एक संत ही है जिसकी शरण में हर एक को स्थान मिलता है। वह हर एक से प्रेम करता है। बुरे से बुरा व्यक्ति भी उसके पास जाए तो उसे भी शरण मिलती है। दुनिया तो उसे पूछती नहीं यदि संत भी उसे शरण न दे तो वह कहाँ जाए ?

परमेश्वर हम तेरी चरण शरण में हैं। तू आ, हमारा हाथ पकड़ कर अपने रास्ते पर ले जा।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के प्रवचन, 21.11.1971 व 9.4.1974 के अंश) ■

## गुरु कृपा : असीम दृष्टि का बोध

१०२०१।२०२१



भक्त चरणदास से किसी ने पूछा, “इतने वर्ष तक आपने गुरु सेवा की है अनथक, क्या प्राप्त हुआ तुम्हें?” भक्त चरणदास कहते हैं, “गुरुदेव ने मेरी आँख की पुतली बदल दी।” भगवान श्री कृष्ण ने भी अर्जुन की आँख की पुतली बदल दी है। गुरु महाराज ऐसी दया करते हैं, ऐसा उपकार करते हैं। अर्जुन को दिव्य चक्षु दिए, ज्ञान के चक्षु दिए। चर्म चक्षु से पार्थ मेरे विराट स्वरूप को, मेरे इस दिव्य स्वरूप को, विश्वरूप को नहीं देख सकता। दिव्य ज्ञान चक्षुओं से पार्थ, मेरे विराट स्वरूप को विषय रूप को देख सकेगा।

“मैं तुम्हें अपने नेत्र देता हूँ, दिव्य दृष्टि, ज्ञान चक्षु तुम्हें देता हूँ। उनसे ही तू मेरे विराट स्वरूप को देख सकेगा।”

जिसकी दृष्टि यहाँ से थोड़ी दूर तक है, इसके आगे क्या हो रहा है नहीं देख सकेगा। इसे ससीम दृष्टि कहा जाता है। जो इससे आगे भी देख सकता है

और आगे देख सकता है उसे असीम दृष्टि कहा जाता है। भगवान श्री ने उसे असीम दृष्टि दी है।

समझने के लिए, जैसे किसी की दृष्टि सिर्फ मृत्यु देख सकती है। कल्पना करें आज यहाँ पर किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई है, घर में शोक है, रोना-धोना चल रहा है और उसी व्यक्ति का पुनर्जन्म पड़ोस में हो गया है अतः उस घर में बाजे बज रहे हैं। जिसकी दृष्टि मृत्यु ही देख सकती है, वह तो रोता रहेगा, बिलखता रहेगा, परन्तु जिसकी दृष्टि मृत्यु के बाद देख सकती है, वह शोक रहित हो जाएगा। उसे पता है मृत्यु के बाद क्या होता है। शरीर मरता है, शरीर ही जन्मता है। उसे पता है, जो मैं हूँ वह न मरता है, न जन्म लेता है। ऐसा ही बोध भगवान श्री गुरु महाराज पार्थ को दे रहे हैं। भगवान ने अपना विशाल रूप दिखाया है जिसमें सारे का सारा अखिल ब्रह्माण्ड बसा है। इसे देख कर तो अर्जुन बड़ा भयभीत हो गया है क्योंकि वह साधक नहीं है, उसके पीछे साधना की कमाई नहीं है। परमेश्वर की अहेतुकी कृपा है अर्जुन पर, इसलिए अर्जुन ऐसा है। हाँ ! श्रद्धा बहुत है, प्रीति बहुत है, ‘सरलता’ अपार है और यह गुण अपने आप में पर्याप्त है व्यक्ति को परमात्मा की कृपा का पात्र बनाने के लिए। साधना नहीं है।

चूंकि साधना नहीं है इसलिए उस विराट स्वरूप को, उस विश्वरूप को, विकराल रूप को देखने की अर्जुन की तैयारी नहीं है, अतः भयभीत है। बहुत डर रहा है, सोचता है कि मैंने कृष्ण को कैसे देखा हुआ है और ये मुझे अपना कैसा रूप दिखा रहे हैं! जो विचित्र बात है वह यह कि अर्जुन उस विराट स्वरूप में देखता है कि भीष्म पितामह, कृपाचार्य, कर्ण इत्यादि सब के सब मरे पड़े हैं। भगवान ने क्या दृष्टि दी है!

“जो आगे होने वाला है जो मैं कर चुका हूँ, वह तू देख! तू नहीं देख सकता, तेरी ससीम दृष्टि यह सब कुछ नहीं देख सकती। इसके लिए असीम दृष्टि

चाहिए। मैंने अपनी दृष्टि दी है इसलिए इसको दिख रहा है कि सब मरे पड़े हैं। मेरे लिए न कोई भूत है न भविष्य। मेरे लिए सब वर्तमान ही वर्तमान है। मुझे भविष्य का भी, भूत का भी पता है जो हर एक को पता नहीं। ऐसी दृष्टि दे दी श्री गुरु भगवान् ने।

अर्जुन बहुत प्रसन्न है। मेरे लिए तो यही समस्या थी, मुझे इनको मारने में ही बड़ा भय लग रहा था, बड़ा भारी संकोच था। भगवान् ने मुझे यह विराट स्वरूप दिखा कर, मेरा संकोच खतम कर दिया। भगवान् इस बात को समझ गए अतएव अपनी दी हुई दृष्टि वापिस ले ली। यह बहुत महत्वपूर्ण है। यदि अर्जुन के पास वही दृष्टि रहती तो अर्जुन न तो धनुष उठाएगा, न युद्ध करेगा। भगवान् यह नहीं चाहते। भगवान् ने विराट स्वरूप इस लिए नहीं दिखाया कि उसका साधन खतम हो जाए। इसलिए दिखाया है कि अर्जुन का कर्तापन का अभिमान खतम हो

जाए। मारना तो उसी को है, stage पर acting तो उसे ही करनी है। लेकिन मारने के बाद उसके मन में अब यह अभिमान नहीं आएगा, कर्तापन का अभिमान नहीं आएगा मैं इन्हें मारने वाला हूँ। वह देख चुका है कि भगवान् अपने विधान के अनुसार उन्हें पहले ही मार चुके हैं, मैंने तो सिर्फ खड़े होकर तीर चलाना है बस बाकी का काम भगवान् ने कर रखा हुआ है। कर्तापन का अभिमान।

पार्थ ! ये तुम्हें विराट स्वरूप दिखाया है, ज्ञान दिया है, दर्शाया है, इसलिए नहीं कि तू युद्ध न करे। नहीं, साधन मिटाने के लिए नहीं, लेकिन तेरे कर्तापन के अभिमान को मिटाने के लिए, यह सब नाटक मैंने आपको दिखाया है।

हर एक के लिए ये बहुत ज़रूरी है। हर एक के गुरु भगवान् श्री कृष्ण जैसे तो नहीं, उन्हें जगत् गुरु कहा जाता है। लेकिन जो जगत् गुरु ने समझाया, जो दर्शाया उस ज्ञान को सामान्य गुरु, संत-महात्मा, श्रोताओं को, अनुयायियों को, संगत को यह बार-बार समझाते रहते हैं। तो एक ढंग से ये संत गुरु भी भक्तजनों को वही ज्ञान चक्षु देते हैं ताकि कर्तापन

का अभिमान खतम हो जाए। बहुत खतरनाक चीज़ है यह कर्तापन का अभिमान 'doership'। यह कर्तापन का अभिमान अर्थात् doership, मैं करने वाला हूँ, कर्तृत्व कैसे अभिव्यक्त करता है अपने आपको। 'मैं और मेरा' दो शब्दों के माध्यम से doership अभिव्यक्त करती है अपने आपको, manifest करती है। आप सबको पता ही है रामायण जी में जो करके दिखाया है वही गीता जी में लिखा गया है। यूँ कहिएगा जो गीता जी में लिखा गया है यह रामायण जी में करके दिखाया है।

आज एक उदाहरण प्रभु राम जी का जिनमें कर्तापन-कर्तृत्व बिल्कुल नहीं है। भगवान् राम ने राजा जनक के दरबार में शिव धनुष को तोड़ा है। सबको पता है, बहुत देर तक तमाशा देखते रहे, उठे नहीं। सब बातें बहुत ध्यान से सुनने और पल्ले बाँधने योग्य है। क्यों नहीं उठे राम ? लेकिन इसके पीछे जो बात हमें दिखाई देती है वह यह कि राम तब उठे जब महर्षि विश्वामित्र ने कहा, "उठो राम ! धनुष को भंग करो, राजा जनक का दुःख दूर करो।"

प्रभु राम ने प्रणाम किया, उठे। मानो कर्तापन अपने ऊपर नहीं लिया। इसमें कर्तृत्व किसका है? गुरु

महाराज जी का। गुरु महाराज की आज्ञा, कर्तृत्व कर्ता बन गई। अब उठे हैं। कर्तापन होने पर जो करेगा उसे सुख भी होगा और दुःख भी होगा। जो निमित्त है उसे न सुख है न दुःख है। उसे पता है मैं तो निमित्त हूँ। मारने वाली गोली उसे न दुःख होता है, न सुख। कुचलने वाली कार उसे न दुःख है न सुख। उसे न कोई सजा मिलती है, निमित्त है। उसके अन्दर कर्तापन की शून्यता है। दोनों में सजा किसको मिलती है - गोली चलाने वाले या कार चलाने वाले को जो कर्ता है, जिसके अन्दर doership है। भगवान् श्री राम ने किया है अपनी doership अपना कर्तृत्व अपने ऊपर न लेकर गुरु महाराज को दे दिया। मैं उनकी आज्ञा का पालन करने जा रहा हूँ। अतः नहीं टूटा तो दुःख नहीं, टूट गया तो कोई हर्ष नहीं। जैसे आए थे वैसे ही लौट

आप सबको पता ही है रामायण जी में जो करके दिखाया है वही गीता जी में लिखा गया है। यूँ कहिएगा जो गीता जी में लिखा गया है यह रामायण जी में करके दिखाया है।

गए। महर्षि विश्वामित्र को जाकर प्रणाम किया, चरणों में बैठे, जो आपने आज्ञा दी थी गुरुदेव मैं करके आ गया। **No doership at all** धनुष टूटा है – किसी ने प्रश्न कर दिया, “औरों से नहीं टूटा तूने ये धनुष कैसे तोड़ दिया?” तोड़ा है तो फिर अभिमान होता। “आप सत्य कहते हैं, यदि मैंने तोड़ा होता तो मुझे जरूर अभिमान होता। मैंने तो गुरु महाराज जी की आज्ञा का पालन किया है।”

किसी ने आगे जा कर कहा आपके जीवन में, आपकी पहली यात्रा में दो महिलाएँ आई एक ताड़का, एक अहिल्या—एक को मार दिया और दूसरी को तार दिया। भगवान श्री तत्काल कहते, “न मैंने किसी को मारा न किसी को तारा है। गुरु महाराज जी की आज्ञा थी मैंने कुछ नहीं किया।” **no doership**। अपने ऊपर कर्तापन का बोझ नहीं लिया, थकान नहीं ली। दिन भर थकते हो न जब आपको लगता है मैंने ये कर दिया, वो कर दिया इत्यादि इत्यादि। किसी एक दिन ऐसा सोच कर देखो कि मैंने कुछ नहीं किया। जो कुछ करने कराने वाला है वह परमात्मा है। शाम को आपको अपनी थकान दूर करने के लिए चाय या कॉफी नहीं पीनी पड़ेगी। थकान किसकी है? **doership** की। **doership** ही – कर्तापन ही बन्धन है, यही बन्धन है।

“ऐसी करी गुरु देव दया, मेरा जग से बन्धन तोड़ दिया।”

यह जो **doership** है इस जग के साथ बन्धन का कारण है। गुरु ज्ञान, दिव्य चक्षु, गुरु कृपा, गुरु आशीर्वाद कहिए जो मर्जी कहिए। गुरु कृपा से बन्धन टूट जाता है। गुरु की हमेशा कोशिश होती है कि इसके अन्दर **doership** खतम हो। कर्तापन का अभिमान खतम हो। परशुराम आए हैं, टूटा धनुष देखा है, “किसने तोड़ा है। तेरे से कैसे टूट गया?” हाथ जोड़ कर प्रभु राम कहते है, “आप रुष्ट न हों। दिखाई तो ऐसा ही देता है कि मुझसे टूटा है। मैं गुनहगार हूँ। आप जो सजा देना चाहें दें।” बड़ी प्यारी मीठी बातें प्रभु राम करते हैं। एक बात कही, “हर वस्तु की एक आयु होती है आप सच मानिएगा मैंने कुछ नहीं किया।” परशुराम को कह रहे हैं, “मैंने

कुछ नहीं किया इस धनुष की आयु खतम हो गई थी टूट गया। मैंने कुछ नहीं किया।” “औरों से क्यों नहीं टूटा?” भगवान राम कहते हैं, “परशुराम जी ! आप उस वक्त आए जब इस की आयु बाकी रहती थी और मैं उस वक्त आया, जब इसकी आयु पूरी हो चुकी थी, बस हाथ लगाते ही धनुष टूट गया।”

एक धनुष राजा जनक के पास – सात्विक अभिमान का प्रतीक। शिव धनुष जो राजा जनक के पास है, राजा जनक ज्ञानी भक्त हैं, ज्ञानी भी हैं, भक्त भी हैं, ज्ञानी भक्त हैं वह अपने पास सात्विक अभिमान भी नहीं रखना चाहते। इसे भी तुड़वाने के लिए वह तत्पर हैं।

जो इसको तोड़ेगा वह सीता को वरेगा। मैं इसे अपने पास नहीं रखना चाहता। एक धनुष राजा कंस के पास भी है वह संसारी है। राजा जनक ‘देह रहित – विदेह’। वह अपने आपको देह नहीं मानने वाले। यह कंस संसारी है, यह नहीं चाहता कि उसके पास जो धनुष है वह टूटे। हम भी तो नहीं चाहते कि हमारे अभिमान को किसी भी प्रकार की ठेस लगे। यह हमसे सहन नहीं होता।

आप घर की सास हो, वृद्ध हो किसी ने हिम्मत कर दी आपकी आज्ञा का पालन नहीं किया, तो फिर क्या हुआ ? आपके अभिमान को लग गई ठेस और आप भड़क उठे? संसारी नहीं चाहता कि उसका अभिमान टूटे। भक्त इस अभिमान को लेशमात्र भी अपने पास नहीं रखना चाहता। वह जानता है कि यदि किसी भी मात्रा में यह मेरे अन्दर रहा तो मुझे परमात्मा के दरबार में प्रवेश नहीं मिलेगा। बहुत अच्छी तरह से भक्त इस बात को जानता है, अतएव लेशमात्र भी वह इसे अपने अन्दर नहीं रहने देता। अभिमान मरेगा कब? गुरु महाराज आपका केस रखेंगे परमात्मा के सामने तब। गुरु वह द्वार है न, जिसको लॉघ कर परमेश्वर के घर में प्रवेश मिलता है ! गुरु आपके केस को **present** करता है परमात्मा के सामने, तो परमात्मा अन्तिम काम करता है, अभिमान को मारने का।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का प्रवचन, मनाली, 25 मई, 2011) ■



## ‘प्रथम दर्शन’

‘प्रथम मिलन’ स्तंभ में सद्गुरु और साधक की प्रथम मिलन की अनुभूतियाँ प्रस्तुत हैं। संतों की ऐसी मान्यता है कि ‘गुरु मिलन’ अकारण संयोग नहीं है अपितु ईश्वरीय विधान है। साधक की प्रबल इच्छा और तलाश पर गुरु स्वयं को सहज प्राप्य बना देते हैं। गुरु का मिलन साधक की आध्यात्मिक प्रगति का एक अत्यंत अनिवार्य सोपान है।

हमारा यह प्रयास रहेगा कि समय-समय पर ‘सत्य साहित्य’ के जरिए श्रीरामशरणम् साधकों के अपने ‘गुरु से प्रथम मिलन’ के अनुभव प्रकाशित करते रहें।

**मानव जन्म की सर्वोच्च उपलब्धि !**

**दिव्यानन्द भरे वे अविस्मरणीय मधुर क्षण।**

महात्माओं, मनीषियों ने कहा है कि अति सौभाग्यशाली है वह मानव जिसे प्रथम प्रयास में ही उस का उद्धारक आध्यात्मिक सद्गुरु मिल जाता है। मैं, तीस वर्ष की अवस्था तक भ्रम और भूलों के मकड़ जाल में उलझा पड़ा था, अहंकार अभिमान के मल-विक्षेप रंजित एक मैली चादर, ‘परम-सत्य’ और मेरे बीच तनी हुई थी। प्रभु कृपा से भाग्य उदय हुआ, कूप, स्वतः प्यासे पथिक के सम्मुख आ गया और मुझे हुआ मेरा प्रथम सद्गुरु दर्शन।



नवम्बर 1959 के प्रथम सप्ताह में, मैं ग्वालियर आया था। पता चला कि उन्हीं दिनों वहाँ सिद्ध संत श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के पंच-रात्रि साधना सत्संग का शिविर लगने को है। तीव्रतम इच्छा हुई — काश! शिविर में शामिल हो सकता। सबने कहा कठिन ही नहीं असम्भव है। केवल दीक्षित व्यक्ति जा सकते हैं उस शिविर में। स्वामी जी महाराज भली भाँति परख कर, खरे उतरे व्यक्ति को ही नाम देते हैं। कितने साधकों को वर्षों लग गए श्री महाराज जी की कसौटी पर खरा उतरने में।

मेरे अनुरोध पर मेरी अर्जी महाराज जी के सामने पेश हुई। “पंच-रात्रि” में सम्मिलित होना चाहते हैं ? “एक बार उन्हें देखूँ तो सही।” महाराज

जी ने कहा। मेरे अभिभावक महोदय वापिस आ कर बोले, ‘स्वामी जी आपको परखना चाहते हैं।

15 मिनट में पहुँचना है। पाँच मिनट में तैयार हो जाओ।’ स्वामी जी महाराज उन दिनों समीप के ही एक वरिष्ठ साधक के निवास में प्रवास कर रहे थे। अभिभावक महोदय, मुझे उस घर की ऊपरी मंजिल के एक प्रकोष्ठ के द्वार पर छोड़ कर चले गए।

प्यारे प्रभु की विशेष कृपा का दिवस था वह, 3 नवम्बर 1959। मुझे अपने जन्म-जन्मान्तर के संचित पुण्य के फलस्वरूप परम दिव्य आकर्षक व्यक्तित्व वाले श्रद्धेय स्वामी श्री सत्यानन्द जी महाराज का प्रथम दर्शन हुआ। मैंने अपने जीवन में कभी इतने निकट से, एकदम एकान्त में स्वामी जी के समान तेजस्वी देव पुरुष के दर्शन नहीं किए थे। नवोदित सूर्य की स्वर्णिम किरणों के समान उस जगमगाते उस देव तुल्य महापुरुष के दिव्य स्वरूप ने मुझे इतना सम्मोहित कर लिया कि मैं अपनी सुध-बुध खो बैठा, मुझे न तो समय का भान रहा, न वस्तु-स्थिति का ज्ञान, बस उस क्षण मुझे एक शब्दातीत आत्मिक शान्ति की अनुभूति हुई।

*हमने बस एक नज़र ही देखा वह जलवा,  
जन्म-जन्मान्तरों को कर दिया रोशन जिसने।*

मैं यद्यपि स्वामी जी के सन्मुख रहा फिर भी  
सत्य साहित्य, जुलाई 2019 9

उनके तेजस्वी मुख—मंडल से निस्तरित विलक्षण ज्योति पुंज की चकाचौंध से ऐसा सकपकाया हुआ था कि मुझे उस पूजा—स्थल में विराज रहे महाराज की ओर आँख उठा कर देखने का साहस ही नहीं हुआ। मैं मंत्रमुग्ध सा उनके नव विकसित कमल कलिकाओं जैसे गुलाबी श्री चरणों की ओर लालची भँवरे के समान निहारता रहा।

तभी एक चमत्कार सा हुआ! प्रथम मिलन के दिवस तत्काल ही करुणानिधान स्वामी सद्गुरु श्री सत्यानन्द जी महाराज ने, अपने सन्मुख सहमे से बैठे — धृति धारणा हीन, धर्म—कर्म में अतिशय दीन, मुझ 30 वर्षीय दासानुदास नवयुवक को मुरार, ग्वालियर में अपने परम स्नेही साधक श्री देवेन्द्र सिंह बेरी के 'पूजा—प्रकोष्ठ' में परम मंगलमय राम नाम का 'मन्त्र—रत्न' प्रदान कर दिया। इस दास पर विशेष अनुकम्पा कर, अपनी दिव्य वाणी, मंगलमय स्पर्श एवं अपनी अज्ञान—तिमिर—हारिणी कृपा दृष्टि द्वारा मुझे दीक्षित कर दिया। उस समय तक, मैं स्वामी जी महाराज की औपचारिक साधना पद्धति से पूर्णतः अनभिज्ञ था। उस पूजा—प्रकोष्ठ में मैं था और मेरे गुरुदेव थे और कोई नहीं था। मेरा प्यासा मन, स्वामी जी की मधुर वाणी से निःसृत अमृत वर्षा से सिंचित हो रहा था। मेरा रिक्त अंतर—घट 'नामामृत' से शनैः शनैः भर रहा था। उनकी वाणी से निःसृत मधुर 'रामनाम' ने मेरे रोम रोम में "राम" को रमा दिया था। मुझे अपने मस्तक पर श्री स्वामी जी महाराज के वरद हस्त का कल्याणकारी स्पर्श महसूस हुआ और उस दिव्य स्पर्शानुभूति से मेरी संपूर्ण काया रोमांचित हो गयी। मैं कृतार्थ हो गया। धन्य हो गया मैं!

सच पूछो तो मेरा यह मानव जन्म सार्थक हो गया क्योंकि स्वामी जी महाराज ने नाम दीक्षा वाले

दिन ही मुझे 'अधिष्ठान जी' भी प्रदान कर दिए और उन्होंने मुझे अगले दिन ग्वालियर में लगने वाले पंच—रात्रि साधना सत्संग में सम्मिलित होने की अनुमति भी दे दी। तत्पश्चात् स्वामी जी मेरी ओर देख कर थोड़ा मुस्कुराए, मुझे रोमांच हो गया, मैं गद्गद् हो गया, मेरी आँखें सजल हो गईं।

पूर्णाहुति की अन्तिम बैठक के बाद विदाई के समय मुझे गले लगा कर मेरी पीठ पर हाथ फेरते—फेरते उन्होंने मेरे तन—मन और मेरे अन्तःकरण पर प्यार और आशीर्वाद का शीतल सुगन्धमय चन्दन लेप लगाया था, उसकी गमक अभी तक आन्तरिक और बाह्य जीवन को पवित्र कर रही है। गुरु कृपा ही तो श्री राम कृपा है। गुरु कृपा में आनन्द ही आनन्द है।

स्वप्नवत सत्संग में मिलन की आनन्दपूर्ण और सुखद घड़ियाँ समाप्त हुई क्योंकि प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्री सत्यानन्द सरस्वती जी महाराज के दर्शन मुझे उस पंच—रात्रि सत्संग के बाद दुबारा नहीं हुए। एक वर्ष में ही महाराज अपने इष्ट परम प्रभु श्री राम के 'परम—धाम' सिधार गए। मैं कानपुर से हरिद्वार भी नहीं पहुँच पाया। मन मसोस कर रह गया।

सद्गुरु स्वामी जी महाराज आज भी हमारे अंग—संग हैं। उनकी अनन्त करुणा मुझे प्राप्त है। हृदय परमानन्द में सराबोर है। मुझे आज इस पल भी उस दिव्य घड़ी के स्मरण मात्र से सिहरन हो रही है। वह, हमारी मनोभावनाओं में, हमारे चिन्तन और विचारों में इस क्षण भी उतने ही जीवन्त और क्रियाशील हैं जितने वह मेरे दीक्षान्त की घड़ी में थे। अध्यात्म के क्षेत्र में हमारे प्रथम मार्गदर्शक थे, हैं और जीवन पर्यन्त रहेंगे। उनके गुलाबी—गुलाबी आभायुक्त श्री चरण आज भी मेरे जीवन का सम्बल हैं उसी तरह जिस तरह भरत के लिए श्री राम की पादुकाएँ थीं। ■

श्री रामायण नामः

Hotel Highland  
MANALI (H.P.)  
175131

14. 8. 93

श्रीगुरुदेव

साधक चरणानन्ददा ।

मन को रिकाम कर सब से सुगम व शक्तिशाली साधन है : राम नाम का जाप । अधिका से अधिका माता में जाप लेना चाहिए । जैसे ही इसकी जाप की तरह हृदय की उमंग बाली है परन्तु यदि मानपूर्वक, परमात्मा को अपना समीपतम सम्पर्क, पादर पूर्वक, जैसे अपना प्रियतम को स्मरण किया जाता है, इस प्रकार राम नाम का जाप अल्पकाल में ही अपना रोग में रोग होता है, मन को मरकत से रोककर उसे सतर्क कर देता है, फिर उसमें संकल्प विकल्प नहीं उठते, संकल्पता नाश हो जाती है । तब मन समापना तो राम में । अतएव राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम जैसे जपें जपें सहित । शब्द उधर ही जाते साधन में, उपर ही चिन्ताएं मात्र मन में समझ उपर ही न रमायें क्योंकि समझ इतना गहन है कि उसे उपर ही में रना है ।

सबको अपने नाम रकार ।

श्री राम चरण धर्म  
V. M. - 27 Jan



## श्रीरामशरणम् हरिद्वार : भव्य शुभारम्भ के संस्मरण

श्री स्वामी जी महाराज को परमधाम से परमेश्वर द्वारा सन् 1925 में व्यास पूर्णिमा के शुभ दिन नाम-प्राप्ति के पश्चात सन् 1928 से आपने राम नाम की दीक्षा देना प्रारम्भ किया। इस प्रकार आप नाम दीक्षा के कार्यक्रम को आगे सम्पन्न करते रहे जिससे नाम दीक्षित साधकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

श्री स्वामी जी महाराज ने दीक्षित साधकों की उन्नति हेतु इन्हें सिधाने के लिए पाँच-रात्रि साधना-सत्संग आरम्भ किए। जहाँ साधक एकान्त में रहकर practical क्रियात्मक साधना करें। यह एक पाठशाला के समान है, जहाँ वे अनुशासन व नियमों का पालन करना सीखते हैं। इसी क्रम में श्री स्वामी जी महाराज ने सन् 1936 में प्रथम पाँच-रात्रि साधना-सत्संग हरिद्वार में एक धर्मशाला में लगाया उसमें बारह साधक सम्मिलित हुए। उसके उपरान्त दूसरा पाँच-रात्रि साधना सत्संग

हरिद्वार में पुनः लगा।

श्री स्वामी जी महाराज के जन्म-दिवस चैत्र-पूर्णिमा पर दो-पाँच रात्रि साधना सत्संग सन् 1955 व 1956 में श्री स्वामी जी के अनन्य भक्त लाला श्री भगवानदास जी कत्याल की कोठी पर दिल्ली में आयोजित हुए। श्री स्वामी जी महाराज के वरिष्ठ एवं प्रिय शिष्य रायबहादुर श्री जोधामल जी कुठियाला ने साधना-सत्संग के लिए अपनी निजी भूमि पर हरिद्वार में 'श्रीरामशरणम् भवन' के निर्माण का निश्चय किया। इस हेतु उन्होंने श्री स्वामी जी महाराज की आज्ञा प्राप्त की। सन् 1956 में जोधामल रोड, बिरलाघाट के पास गंगा तट पर श्रीरामशरणम् का निर्माण प्रारम्भ हुआ। श्री स्वामी जी महाराज के मार्गदर्शन में भवन-निर्माण कार्य संचालित होता रहा। उसमें प्रमुखतः एक बड़ा हॉल, एक जाप कक्ष, एक श्री स्वामी जी महाराज का निवास-कक्ष बनाया गया। भवन के प्रवेश पर 'श्रीरामशरणम्' लिखा गया।



सत्संग—हाल के प्रवेश—द्वार पर 'श्रीरामशरणम् गच्छामि' लिखा गया। सत्संग हॉल में श्री अधिष्ठान जी के ऊपरी स्थान पर श्रीरामशरणम् वयं प्रपन्नाः लिखा गया। श्री अधिष्ठान जी के दोनों ओर स्थितप्रज्ञ के लक्षण के श्लोक एवं श्री अधिष्ठान जी के सम्मुख दीवार पर दोनों ओर भक्ति एवं भक्त के लक्षण के श्लोक लिखाए गए। सत्संग हाल में दीवारों पर कुछ धुनें अंकित की गईं एवं जाप कक्ष में श्री अधिष्ठान जी के ऊपर दीवार पर 'श्रीरामशरणम् अहं प्रपद्ये' लिखा गया।

इस प्रकार श्रीरामशरणम् हरिद्वार का भवन व्यास—पूर्णिमा सन् 1956 के पूर्व निर्मित हो गया।

श्री स्वामी जी महाराज ने श्रीरामशरणम् में प्रवेश करने से पूर्व कुछ साधकों के साथ एक करोड़ राम नाम का जाप पूर्ण किया। व्यास—पूर्णिमा के मंगल पर्व पर श्रीरामशरणम् के उद्घाटन के शुभ अवसर पर श्री स्वामी जी महाराज ने ज्योति लेकर 'मंगल नाम जय जय राम' धुन गाते हुए प्रवेश किया एवं श्री अधिष्ठान जी के समक्ष ज्योति स्थापित की। श्री स्वामी जी महाराज व सभी सत्संगी हॉल में बैठ गए। और सत्संग तथा प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। श्री स्वामी जी ने कहा "हरिद्वार में यह सत्संग—भवन अति सुन्दर बन गया है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस में राम—नाम का आराधन सदैव होता रहे।"

इस प्रकार श्रीरामशरणम् हरिद्वार का भव्य उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन के पश्चात् विजयदशमी के पर्व पर प्रथम रामायणी सत्संग नवरात्रि में श्रीरामशरणम् में आयोजित हुआ। आगामी वर्ष 1957 में श्री स्वामी जी महाराज के जन्म दिवस चैत्र पूर्णिमा पर पाँच रात्रि, व्यास पूर्णिमा पर पाँच रात्रि और विजयदशमी पर रामायणी सत्संग का आयोजन हुआ। अतः सभी सत्संग श्रीरामशरणम् हरिद्वार में श्री स्वामी जी महाराज के मार्ग दर्शन एवं सान्निध्य में आयोजित होते रहे।

पूज्यपादश्री स्वामी जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं पूज्य श्री विश्वामित्र जी महाराज द्वारा भी श्रीरामशरणम् हरिद्वार में उक्त साधना सत्संग आयोजित किए जाते रहे। जो वर्तमान में भी उन्हीं नियमों तथा अनुशासन के अनुसार आयोजित हो रहे हैं।

श्रीरामशरणम् हरिद्वार की मुख्य विशेषता है कि वहाँ हमारे तीनों गुरुजनों ने साधना—सत्संग लगाए हैं। इसलिए वहाँ पर परमात्मा की विशेष कृपा और आध्यात्मिक तप का प्रभाव है।

यहाँ पर राम—नाम का आराधन, हरिद्वार तीर्थ एवं गंगा के प्रताप का लाभ अनायास ही श्रीरामशरणम् में प्राप्त हो जाता है। अस्तु श्रीरामशरणम् हरिद्वार का विशेष महत्व है।

अतएव प्रत्येक साधक को श्रीरामशरणम् हरिद्वार में आयोजित साधना सत्संग में एक बार अवश्य सम्मिलित होना चाहिए।

(एक प्रत्यक्षदर्शी साधक का विवरण)

## विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

मार्च से जून 2019

**साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण**

- **जबलपुर**, मध्यप्रदेश 12 मार्च मंगलवार को सायं 4 से 5 बजे तक श्री विशेष अमृतवाणी सत्संग के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 173 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **हरिद्वार** में 13 से 16 मार्च को परम पूजनीय श्री महाराज जी के अवतरण दिवस पर तीन

रात्रि साधना सत्संग हुआ।

- **दिल्ली** में 20 से 22 मार्च को होली के उपलक्ष्य में खुला सत्संग हुआ।
- **नरोट मेहरा**, पंजाब में 26 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 86 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **कोल्हापुर**, महाराष्ट्र में 30 मार्च श्री अमृतवाणी सत्संग हॉल के उद्घाटन के उपलक्ष्य में विशेष

- अमृतवाणी सत्संग व प्रवचन हुए जिसमें 24 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ईचलकरंजी**, महाराष्ट्र में 31 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 73 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **गांधी धाम**, महाराष्ट्र में 31 मार्च को पहली बार श्री अमृतवाणी के विशेष सत्संग के बाद 218 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 5 से 14 अप्रैल तक मौन साधना सत्संग लगा।
  - **रुपाडिया**, नेपाल में 13 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 192 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **भरेड़ी**, हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रैल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 64 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 422 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **हरिद्वार** में 15 से 20 अप्रैल को परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द महाराज जी के अवतरण दिवस पर पांच रात्रि साधना सत्संग हुआ।
  - **मंडी**, हिमाचल प्रदेश में 21 अप्रैल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **लम्बासा व मनी**, फीजी में 21 अप्रैल को एवं सुवा, फीजी में 28 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ इस दौरान 79 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **बटिण्डा**, पंजाब में 22 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 118 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **काठमण्डू**, नेपाल में 27 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 64 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **बटाला**, पंजाब में 5 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 138 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **कंडाघाट**, हिमाचल प्रदेश में 12 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 29 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 100 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **चम्बी**, हिमाचल प्रदेश में 26 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
  - **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है।
  - **किश्तवाड़**, जम्मू एवं कश्मीर में 22 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हो रहा है।
  - **भद्रवाह**, जम्मू एवं कश्मीर, में 23 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हो रहा है।
  - **रामगढ़**, चंदोली उत्तरप्रदेश में 23 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हो रहा है।
  - **सेलर्सबर्ग**, अमेरिका में 27 से 30 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है। जिसमें 27 एवं 30 जून को नाम दीक्षा होगी।
  - **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूज्य श्री महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग का आयोजन हो रहा है।
  - **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में मार्च, अप्रैल एवं मई में साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 145 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति**
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण बड़ी तेजी से चल रहा है और लैंटर पड़ गया है।
  - **धारीवाल**, पंजाब में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। ■

<b>Sadhna Satsang (July to December 2019)</b>		
Haridwar	30 June to 3 July	Sunday to Wednesday
Haridwar (Guru Purnima)	11 to 16 July	Thursday to Tuesday
Haridwar(Ramayani)	29 Sept. to 8 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Monday to Thursday
Gwalior	22 - 25 November	Friday to Monday

<b>Open Satsang (July to December 2019)</b>		
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday & Sunday
Hiranagar	18-August	Sunday
Ratangarh	31 August - 1 September	Saturday & Sunday
Rewari	7 to 8 September	Saturday & Sunday
Hisar	14 - 15 September	Saturday & Sunday
Gurdaspur	20 - 22 September	Friday to Sunday
Sydney	28 to 29 September	Saturday & Sunday
Jammu	11 to 13 October	Friday to Sunday
Alampur	20-October	Sunday
Pathankot	2 to 3 November	Saturday & Sunday
Amritsar	10-November	Sunday
Kathua	17-November	Sunday
Fazalpur	30 November to 1 December	Saturday & Sunday
Bhiwani	7 to 8 December	Saturday & Sunday
Sujanpur	13 to 15 December	Friday to Sunday
Surat	21 - 22 December	Saturday & Sunday
Hoshiarpur	29-December	Sunday

<b>Poornima (July to December 2019)</b>	
16 July	Tuesday
15 August	Thursday
14 September	Saturday
13 October	Sunday
12 November	Tuesday
12 December	Thursday

<b>Deeksha in Shree Ram Sharnam Delhi (July to December 2019)</b>		
16th July	Tuesday	4.00 PM
25th August	Sunday	10.30 AM
22th September	Sunday	10.30 AM
20th October	Sunday	10.30 AM
17th November	Sunday	11.00 AM
22th December	Sunday	11.00 AM

<b>Naam Deeksha in Other Centres (July to December 2019)</b>		
07-Jul	Sunday	Kolkata, West Bengal
11-Aug	Sunday	Rohtak, Haryana
18-Aug	Sunday	Hiranagar, J & K
01-Sep	Sunday	Ratangarh, Rajasthan
08-Sep	Sunday	Jalandhar, Punjab
08-Sep	Sunday	Rewari, Haryana
15-Sep	Sunday	Hisar, Haryana
22-Sep	Sunday	Gurdaspur, Punjab
29-Sep	Sunday	Sydney, Australia
13-Oct	Sunday	Jammu, J&K
20-Oct	Sunday	Alampur, HP
03-Nov	Sunday	Pathankot, Punjab
10-Nov	Sunday	Amritsar, Punjab
17-Nov	Sunday	Kathua, J&K
22,23,24 Nov	Fri, Sat, Sun	Gwalior, MP
01-Dec	Sunday	Fazalpur, Punjab
08-Dec	Sunday	Bhiwani, Haryana
15-Dec	Sunday	Sujanpur, Punjab
22-Dec	Sunday	Surat, Gujarat
29-Dec	Sunday	Hoshiarpur, Punjab

## Gratitude

It is very fortunate that we get to live together with our family. There is always someone to care for us and do things for us out of love. Think of how do you get to school? Who packs your lunch?

You are also very lucky to be able to live with your family in a house. You must have seen people on the road who are homeless. Have you ever thought about how their life is different from yours? Is their life more difficult?

Do you ever feel thankful for all the comfort and all the care you have?

Think about it and write below-

I am grateful to..

- 1)
- 2)
- 3)

I am grateful for..

- 1)
- 2)
- 3)



## Devotion to the Guru

Chhatrapati Shivaji, the famous warrior and Maratha king who lived in the seventeenth century, was a faithful devotee of his Guru, Samarth Ramdas Swami. Over the years, his devotion to his Guru made him the favoured disciple. Many disciples felt jealous of this special relationship between Shivaji and Guru Samarth and attributed it to the fact that Shivaji was a king.

Guru Samarth heard about their jealousy and decided to remove this misapprehension. One morning he took all his disciples, including Shivaji, to a forest which

was far away. On the way, Samarth entered a cave and pretended to have a severe stomach ache. The disciples saw their Guru groaning with pain and asked how they could help him. Guru Samarth said that the only cure was the milk of a tigress. The disciples felt crest fallen since they knew it was an impossible demand to fulfil.

Shivaji immediately picked up a pot and left in search of a tigress. After wandering for some time, he saw two tiger cubs. Shivaji realized that the mother would be close by. Though he was a brave warrior and could easily have fought the animal he thought it was better to go to her. He gathered courage and folded his hands in front of the tigress : 'Oh Mother, I have not come here to harm either you or your cubs. I need your milk to cure my Guru's illness. Please let me take it. I shall give it to my Guru and come back to you. Then if you want, you may eat me.'

It is a truism, that even mute animals can be won by love. The tigress stopped growling and soon allowed Shivaji to milk her and fill the pot. Brave Shivaji now bowed down to her in gratitude. He then rushed with the milk pot to his Guru. On seeing Shivaji, Guru Samarth exclaimed loudly: 'You have managed to bring the milk of a tigress! God bless you Shiva! When there is such a faithful and devoted disciple like you, how can the Guru be in pain for long?'

Guru Samarth blessed Shivaji. All the disciples now understood the reason behind their Guru's special affection for Shivaji. They understood that a Guru only loves those disciples who are worthy of his affection and grace. They realized that instead of being jealous of disciples like Shivaji they should emulate him and strive to serve their Guru whole heartedly. ■

Credits: Illustration on Pages 2, 3 & 4 are drawn from childrens' cards made on the occasion of Guru Purnima.



यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,  
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित  
एवं रेच स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए-27, नारायणा औद्योगिक एरिया, फेज 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and  
printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org